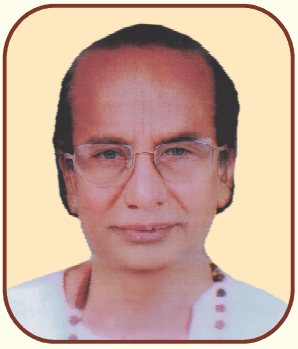

SHRI BINOD KUMAR PASAYAT

Shri Binod Kumar Pasayat is one of the most eminent poet and author from Odisha. His contribution to Sambalpuri / Koshli literature is priceless. He is popularly known for his simplicity in his poems and other writings. He is widely recognized in the vast region of Western Odisha for his Sambalpuri folk songs.

2. Born on 3rd December, 1935, Shri Pasayat is a barber by profession. When he was ten years old, he was introduced to the world of drama. He took part as a child artist in plays performed by the auspicious Ramji Drama Party that was flourishing with the patronage of the royal family of Bolangir. After that he started his journey in the literature of Sambalpuri/ Koshli.

3. Shri Pasayat came to Sambalpur in the year 1953 and opened a barber shop in Sambalpur. This was the turning point of his life because he used this shop not only for his earnings but he used to write some poems and songs etc.

4. Shri Pasayat is the recipient of many numerous awards and honours. He is honoured with three most popular state level honours like Sarala Puraskar in 2008, Odisha Sahitya Academy Puraskar in 2010 and Sarada Prasanna Samman by Odisha Sangit Natak Academy in 2019. He has received many district and local level honours also. Despite having earned such high fame and recognition, he has never left working as a barber which is the customary trade of his forefathers.

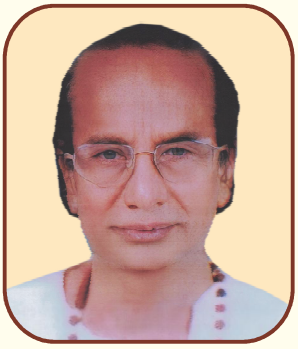

श्री विनोद कुमार पशायत

श्री विनोद कुमार पशायत ओडिशा के प्रख्यात कवि और लेखक हैं। संबलपुरी एवं कोशली साहित्य में उनका अमूल्य योगदान है। वह अपनी कविताओं और अन्य रचनाओं में सरलता के लिए अत्यंत लोकप्रिय हैं। वह संबलपुरी लोक गीतों के लिए पश्चिमी ओडिशा के बहुत बड़े क्षेत्र में विख्यात हैं।

2. 03 दिसम्बर, 1935 को जन्मे, श्री पशायत पेशे से नाई हैं। दस वर्ष की आयु में उन्हें नाटक की दुनिया से परिचित कराया गया। बोलनगीर के शाही परिवार के संरक्षण में फलफूल रही रामजी ड्रामा पार्टी द्वारा मंचित नाटकों में उन्होंने बाल कलाकार के रूप में भाग लिया। इसके बाद संबलपुरी/कोशली साहित्य में उनकी यात्रा शुरू हुई।

3. श्री पशायत वर्ष 1953 में सम्बलपुर आए और उन्होंने यहाँ नाई की दुकान खोली। यहाँ से उनके जीवन में नाटकीय मोड़ आया क्योंकि उन्होंने इस दुकान का उपयोग केवल आय के साधन के लिए ही नहीं किया बल्कि यहीं वह कविताओं और गीतों आदि की रचना भी करने लगे।

4. श्री पशायत को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें तीन अत्यंत लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कारों जैसे वर्ष 2008 में सरला पुरस्कार, वर्ष 2010 में ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2019 में ओडिशा संगीत नाटक अकादमी द्वारा सारदा प्रसन्न सम्मान से नवाजा गया है। उन्हें अनेक जिला एवं स्थानीय स्तर के सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। इतनी लोकप्रियता और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के बाद भी उन्होंने नाई के रूप में कार्य करके अपने पूर्वजों का पुश्तैनी पेशा कभी नहीं छोड़ा है।